Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **19.06.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

तक़वा हमारे दिलों में मज़बूती के साथ स्थापित हो जाए और अल्लाह तआला की मुहब्बत तथा इश्क़ हमारा आहार बन जाए। हमारा प्रत्येक कर्म तथा हमारा प्रत्येक कथन व काम अल्लाह तआला की इच्छानुसार हो जाए और जब हम उसके समक्ष उपस्थित हों तो अपनी प्रसन्नता का प्रमाण पत्र हमें देने वाला हो। अल्लाह तआला करे कि रमज़ान हमें वास्तव में ये सब कुछ प्राप्त करने वाला बना दे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज जुम्अः का बरकतों वाला दिन है तथा रमज़ान के बरकतों वाले महीने का पहला रोज़ा है। अतः आज का दिन असंख्य बरकतों से शुरू होने वाला दिन है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अः के बरकतों वाले दिन होने के महत्व के विषय में सदैव के लिए यह शुभ सूचना दी है कि इस दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें मोमिन अपने रब के समक्ष जो दुआ करे, वह क़बूल की जाती है और फिर रमज़ान के विषय में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के द्वार खोल दिए जाते हैं और नर्क के द्वार बन्द कर दिए जाते हैं।

अतः अल्लाह तआला की रहमत इस महीने में विशेष जोश में आती है और मोमिनों पर अल्लाह तआला की रहमतों तथा कृपाओं की वर्षा होती है परन्तु साथ ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन कृपाओं को ग्रहण करने के लिए कुछ शर्तें बयान फ़रमाईं कि न ही इन दिनों में व्यर्थ की बातें हों न शोर व दंगा हो, न गाली गलौच और लड़ाई झगड़ा हो। हर बुरे व्यवहार के जवाब में रोज़दार का यह जवाब होना चाहिए कि मैं रोज़ेदार हूँ और मैं ख़ुदा तआला के लिए इन सारे हंगामों से बचता हूँ और जब यह स्थिति होगी तो वास्तविक रूप में रोज़े का भी आभास होगा। वह रोज़ा होगा कि इंसान ख़ुदा तआला के लिए प्रयास के द्वारा इस महीने में अल्लाह तआला के आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत करे। फिर इस बात को कि रमज़ान के महीने का क्या महत्व है, किन लोगों के लिए रोज़े रखना अनिवार्य है, किस प्रकार रखने चाहिएँ, क्या पाबन्दियाँ हैं? अल्लाह तआला ने इसको दुआ की स्वीकृति के विषय के साथ इस प्रकार बाँधा है कि फ़रमाया- وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ [۲:۱۸۶] अर्थात कि जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे विषय में पूछें तो बता दे कि मैं इनके पास हूँ जब दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी दुआ क़बूल करता हूँ। तो चाहिए कि वे दुआ करने वाले भी मेरे आदेशों को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ। अतः फ़रमाया कि रमज़ान के दिन इतने मुबारक हैं कि इन दिनों की इबादतों के बाद जब मेरे बन्दे मेरे विषय में सवाल करें तो कह दे मैं बिल्कुल निकट हूँ। أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ जब पुकारने वाला पुकारता है तो मैं उसकी दुआ को क़बूल करता हूँ। अतः रमज़ान के महीने में जो जुम्अे आते हैं उनकी महत्व दो गुना हो जाता है। दिन भी दुआ के कबूल होने के दिन हैं तथा रातें भी दुआ के क़बूल होने की रातें हैं। लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुझें नहीं पता कि कौनसी घड़ी दुआ के क़बूल होने की घड़ी है। इस लिए दिन भी और रातें भी दुआओं में व्यतीत करो। इस प्रकार इन दिनों से हमें अधिकाधिक लाभ प्राप्त करना चाहिए। एक तो रमज़ान में साधारणतः कि इसमें शैतान को बाँध कर ख़ुदा तआला ने जन्नत के द्वार खोल दिए हैं और बन्दों के निकट आ गया है और फिर रमज़ान के जुम्अों से भी पूरा लाभ प्राप्त करना चाहिए परन्तु सबसे महत्व पूर्ण दुआ जो इन दिनों में करने की आवश्यकता है, वह यह है कि बड़े विनम्र भाव से तथा श्रद्धा पूर्वक इंसान अल्लाह तआला से यह दुआ करे कि ऐ अल्लाह मुझे केवल रमज़ान ही में नहीं बल्कि सामान्य प्रस्थितियों में भी उन लोगों में शामिल कर ले जिनकी दुआएँ रात को भी क़बूल होती हैं तथा दिन में भी क़बूल

होती हैं ताकि रमज़ान एक पवित्र बदलाव पैदा करने वाला हो, तक़वा पर चलाने वाला हो, मैं सदा के लिए हिदायत पाने वालों में शामिल हो जाऊँ। जब अल्लाह तआला ने पहली आयत में रोज़ों के महत्व का वर्णन फ़रमाया, जो मैं ने आयत पढ़ी है इससे पहले, कि पहली क़ौमों पर भी रोज़ा अनिवार्य किया गया है इसी प्रकार तुम्हारे लिए भी अनिवार्य किय गया है। तो इसका यह अर्थ नहीं कि क्यूँकि पहली क़ौमें रोज़े रखती थीं इस लिए तुम भी रखो बल्कि यह है जो इस आयत के अन्त में कहा गया है कि لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْن ताकि तुम तक़वा धारण करो और रूहानी व नैतिक दुर्बलताओं से बचो।

फिर इस स्थान पर इस आयत में जो मैंने पढ़ी है, फ़रमाया अन्त में इसके कि لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ताकि रुश्द प्राप्त करो। रुश्द का अर्थ है उपयुक्त तथा सीधा रास्ता, उपयुक्त कर्म तथा मार्ग दर्शन, नैतिकता, मस्तिष्क एंव बुद्धिमानी की व्यापकता तथा उचित ढंग से इसका प्रयोग तथा अपनी इस दशा में दृढ़ता प्राप्त करना। अतः जब इंसान ख़ुदा तआला के आगे निष्ठा पूर्वक झुकता है तो जहाँ दुआओं की क़बूलियत के दृश्य देखता है वहीं तक़वा तथा नेकी पर दृढ़ रहते हुए अपने ईमान एंव विवेक में भी मज़बूत होता चला जाता है और यूँ अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को समेटने वाला बनता है।

अतः रमज़ान असंज्य बरकतों का महीना है परन्तु ये बरकतें उन्हें मिलती हैं जो अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करें तथा ईमान में बढ़ें। अतः हमें यह अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि नेकी और तक़वा पर स्थापित होकर ही हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सकते हैं और व्यक्तिगत रूप से तथा जमाअती रूप से भी हमें वे फल मिलेंगे जो अल्लाह तआला ने हमारे भाग्य में लिखे हुए हैं, इन्शाअल्लाह। और जैसा कि मैंने कहा, हम विनम्रता एंव विनयता दिखाएँगे, अपनी ग़ल्तियों को स्वीकार करेंगे और फिर अल्लाह तआला को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे तो फिर फल भी अल्लाह तआला की कृपा से लगेंगे। इंसान में बुराइयाँ भी हों, वह पापी भी हो, दोषी भी हो। परन्तु जब तक उसके हृदय में ख़ुदा तआला का भय रहे, दोषों को अनुभव करता रहे, तक़वा दिल में हो तो अल्लाह तआला दोषों को ढांपता चला जाता है और अन्ततः एक दिन उसे तौबा की तौफ़ीक़ दे देता है। अतः इन दिनों में सबसे अधिक अपने लिए, अपने रिश्तेदारों के लिए, जमाअत के लोगों के लिए, यह दुआ करनी चाहिए कि हममें से प्रत्येक को अल्लाह तआला का तक़वा प्राप्त हो। एक दूसरे के लिए जब हम दर्द के साथ दुआएँ करेंगे तो फ़रिश्ते भी हमारे साथ दुआओं में शामिल हो जांएगे और रमज़ान की बरकतों के वास्तविक एंव सदैव प्रभाव शाली दृश्य भी हम देखने वाले होंगे। तक़वा क्या है? तक़वा, ख़ुदा तआला का डर और भय है। और जब तक हममें ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ तथा भय रहेगा हमारी दुर्बलताओं तथा पापों को भी अल्लाह तआला छिपाता रहेगा और हम उसकी सुरक्षा में रहेंगे।

अः इस महीने की बरकतों से लाभ प्राप्त करने के लिए हममें से हर एक को ख़ुदा तआला का बन्दा बनने का प्रयास करना चाहिए। यदि हमारी भूल के कारण अल्लाह तआला हमारी दुआओं को कुछ देर के लिए टालता भी है तो उस दयावान माँ की भांति जो बच्चे से उसके सुधार के कारण कुछ देर के लिए रूठ जाती है और उसमें अधिक क्रोध नहीं होता। परन्तु जब बच्चा माँ से प्रेम के कारण उसकी ओर जाता है तो माँ गले भी लगा लेती है। बल्कि इससे पहले कई बार आँखों के छोर से देख भी लेती है कि बच्चा किस प्रकार की गतिविधियाँ कर रहा है, मेरे पास आता भी है कि नहीं। तो इस प्रकार जब बच्चा जाता है तो अप्रसन्नता दूर हो जाती है। अतः अल्लाह तआला जो माँओं से भी अधिक क्षमा करने वाला है वह तो यह देखता है कि कब मेरे बन्दे मेरी ओर तौबा करते हुए आएँ और मैं उन्हें माफ़ करूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा पर इतना प्रसन्न होता है कि इतना प्रसन्न वह वयक्ति भी नहीं होता जिसे जंगल में अपनी खोई हुई ऊँटनी मिल गई हो। अतः यह रमज़ान का महीना भी इस लिए है कि बन्दा अल्लाह तआला की मुहब्बत अपने दिल में रखते हुए यदि पूरे वर्ष की ग़ल्तियों तथा कमियों के बावजूद अल्लाह तआला की ओर इस धारणा के साथ आए कि वह उसकी तौबा क़बूल करे तो अल्लाह तआल दौड़कर उसको गले लगाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो व्यक्ति एक बालिश्त मेरे निकट होता है मैं उससे एक गज़ निकट होता हूँ। यदि वह मुझसे एक हाथ निकट होता है तो मैं उससे दो हाथ निकट होता हूँ और जब वह मेरी ओर चलकर आता है तो मैं उसकी ओर दौड़कर आता हूँ। अतः ऐसा ख़ुदा जो माँओं से भी अधिक मेहरबान है और जिसने तौबा क़बूल करने तथा अपने बन्दे से प्रसन्न होने के विभिन्न उपाय किए हुए हैं यदि बन्दा उनसे लाभ न उठाए तो फिर यह बन्दे का दुर्भाग्य है और कठोरता है इसकी। अल्लाह तआला की मुहब्बत का चित्रण यद्यपि इन उदारणों के द्वारा किया गया है परन्तु वास्तव में अल्लाह तआला की मुहब्बत का चित्रण इन उदाहरणों से ऊपर महान है। अल्लाह तआला जिस दया एंव प्रेम के साथ अपने बन्दे की

ओर देखता है उसका चित्रण हम कर ही नहीं सकते। इन हदीसों से भी स्पष्ट है कि उदाहरण देने के बावजूद कि वास्तव में ये तुलनाएँ यद्यपि प्रेम का एक उच्चतम रूप स्थापित करती हैं परन्तु अल्लाह तआला की बन्दे से मुहब्बत तुच्छारी इस दुनिया के उदाहरण की उपमा से अत्यधिक उच्च स्तरीय है तथा वास्तव में उसका आभास कठिन है। इस मुहब्बत का एक अन्य उदाहरण पेश करता हूँ जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाई। बदर के युद्ध में जब दुश्मन पराजय हो चुका था और जंग लगभग समाप्त हो चुकी थी और काफ़िरों के बड़े बड़े यौद्धा अपनी सवारियों पर बैठकर उन्हें कोड़े मारकर जल्द से जल्द युद्ध के मैदान से भागने तथा मुसलमानों से दूर होने का प्रयत्न कर रहे थे। उस समय एक महिला युद्ध के मैदान में बिना किसी भय के घूम रही थी और उस पर एक प्रकार का जोश और पागलपन तारी था और कभी एक बच्चे को उठाती तथा कभी दूसरे को। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस महिला को देखा तो सहाबा से फ़रमाया कि इस महिला का बच्चा गुम हो गया है और यह उसे तलाश कर रही है और माँ की मुहब्बत इतनी प्रभावी है कि इसको कोई चिंता नहीं कि यह युद्ध के मैदान में है और यहाँ हर ओर विनाश ही विनाश है। वह महिला इस प्रकार बावली सी फिरती रही, जिस बच्चे को देखती उसे गले लगा लेती परन्तु जब ध्यान से देखती तो उसका बच्चा न होता, फिर उसे छोड़कर आगे बढ़ जाती। अन्ततः उसे अपना बच्चा मिल गया। उसने उसे गले से लगाया, अपने साथ चिमटाया, प्यार किया और फिर दुनिया जहान से ध्यान हटाकर वहीं उसे लेकर बैठ गई। न उसको यह चिंता थी कि यह युद्ध क्षेत्र है, न उसे यह चिंता थी कि यहाँ लाशें हर ओर बिखरी पड़ी हैं। उसको यह विचार भी न आया कि जंग अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई और उसे भी कठिनाई हो सकती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुमने देखा कि जब उसको अपना बच्चा मिल गया तो किस प्रकार शांति से बैठ गई परन्तु इससे पहले जब बच्चे की खोज में थी तो किस प्रकार बेचैनी प्रकट हो रही थी और व्याकुल होकर दौड़ रही थी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यही उपमा अल्लाह तआला की अपने बन्दों के साथ प्रेम की है बल्कि वह इससे भी अधिक प्यार करता है। जो बन्दा अपने पापों एंव दोषों के कारण ख़ुदा तआला को खो देता है तो ख़ुदा तआला को उसका ऐसा दुःख होता है जैसा उस महिला को अपने बच्चे के खोए जाने का। और फिर जब बन्दा तौबा के पश्चात वापस आता है तो अल्लाह तआला को इससे अधिक प्रसन्नता मिलती है जितनी उस महिला को अपने बच्चे के मिलने के कारण प्राप्त हुई। तो हमारा ख़ुदा सदैव क्षमा के लिए तैय्यार है परन्तु शर्त यह है कि हम भी उसकी क्षमा शीलता को ढूंडने के लिए तैय्यार हों और निकलें।

अतः जब ऐसा प्यारा हमारा ख़ुदा है तो अत्यधिक हमें क़ुर्बानी करके उसकी ओर बढ़ने की आवश्यकता है। अतः इस बरकतों वाले महीने में हमें उस सत्तारुल उयूब (दोषों को छिपाने वाला) और ग़ाफ़िरुज़्ज़नूब (पापों को ढांपने वाला) ख़ुदा की ओर दौड़ने की आवश्यकता है। उसके आगे झुकने का भरसक प्रयास करने की आवश्यकता है। शैतान हर कोने पर खड़ा हमें अपने स्वार्थों का बन्दी बनाने के प्रयास में लगा हुआ है परन्तु हमने उसे मुक़ाबला करते हुए, अल्लाह तआला की शरण में आने का प्रयास करते हुए, उसके प्रत्येक आक्रमण से बचना है तथा असफल करना है उसे। और अपने आपको अल्लाह तआला का वास्तविक भक्त बनाना है। तभी हम रमज़ान से उपयुक्त रंग में लाभान्वित हो सकेंगे। हम अपनी दुआओं को केवल व्यक्तिगत अथवा अपने सगे सम्बंधियों तक सीमित न रखें बल्कि इनको अत्यधिक विस्तृत करने की आवश्यकता है तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में होने का हक़ अदा कर सकते हैं, तभी हम अल्लाह तआला के उस उपकार के आभारी हो सकते हैं जो अल्लाह तआला ने हम पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल फ़रमाकर किया है। हमारा काम अपने आपको इस जमाअत में शामिल करके समाप्त नहीं हो गया। अहमदी बनने के बाद यही पर्याप्त नहीं कि हम अहमदी हो गए और बैअत कर ली बल्कि बड़ा भारी दायित्व अल्लाह तआला ने हम पर डाला है तथा इस दायित्व को निभाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को दुआओं की ओर ध्यान दिलाया है ताकि हम जमाअत की प्रगति में सहायक एंव सहयोगी बन सकें। हम दीन तथा दुर्बल हैं, अपने दोषों को स्वीकार करते हैं, अपनी अयोग्यता को भी स्वीकार करते हैं परन्तु इन सारी बातों के बावजूद हम वे लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला ने एक महान उद्देश्य की प्राप्ति का भार डाला है और यह दायित्व अल्लाह तआला की कृपा को ग्रहण किए बिना नहीं हो सकती।

अतः हमें दुआओं की ओर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। हम तो दुर्बल भी हैं व्याकुल भी हैं, काम बहुत बड़ा है और केवल हमारे प्रयास तो पूरा नहीं कर सकते। हाँ, हम तेरे आदेशों के अंतर्गत हर प्रकार की क़ुरबानी के लिए तत्पर

हैं। लेकिन तू भी इन्हीं छुपे हुए साधनों को प्रदर्शित कर तथा हमारे सहयोग में लगा दे जो तू ने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए फ़रमाए हैं ताकि यह असम्भव कार्य सम्भव हो जाए। वास्तविकता भी यही है कि अल्लाह तआला ने हमें प्रत्यक्ष माध्यम बनाया है अन्यथा वास्तविक माध्यम जिसने दुनिया को विजय करना है वह कोई अन्य माध्यम है परन्तु एक प्रकार का दर्द इस विजय को प्राप्त करने का हमारे दिलों में होना चाहिए और वह दर्द दुआओं के रूप में हमारे दिलों से निकलना चाहिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक उदाहरण दिया कि हमारी उपमा वही है, जैसे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कंकर उठाकर बदर के युद्ध के समय फेंके थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि مَارَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى अर्थात तुम्हारा कंकर फेंकना, तुम्हारा कंकर फेंकना नहीं था बल्कि ख़ुदा तआला का कंकर फेंकना था। तुम्हारे फेंके हुए कंकर तो थोड़ी दूर जाकर गिर पड़ते परन्तु ये तुमने नहीं फेंके बल्कि हमने फेंके थे। उधर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ कंकर फेंकने के लिए चला, उधर ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हमने आँधी को चला दिया और इस कारण से आँधी ने करोड़ों अरबों कंकड़ उठाकर काफ़िरों की आँखों में डाल दिए, जिसके फलस्वरूप उनकी आँखें बन्द हो गईं और वे आक्रमण में असफल हुए। अर्थात उन मुट्ठी भर कंकरों के पीछे मूल रूप से ख़ुदा तआला की शक्ति थी। इस प्रकार हमारी स्थिति भी बदर के उन कंकरों के जैसी है जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी मुट्ठी में लिया था और काफ़िरों की ओर फेंका था। उन कंकरों ने काफ़िरों को अन्धा नहीं किया था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फेंके थे बल्कि उन कंकरों ने अन्धा किया था जो आँधी के रूप में अल्लाह तआला ने उड़ाए थे।

अतः इन दिनों में बहुत दुआएँ करें। अपने लिए भी, एक दूसरे के लिए भी और जमाअत की उन्नति के लिए भी और दुश्मन की असफलता एंव निराशा के लिए जी, अल्लाह तआला की शान एंव प्रदर्शन के लिए भी। दुनिया ख़ुदा तआला के अस्तित्व से इंकारी होती जा रही है, ख़ुदा करे अल्लाह तआला को पहचानने वाली बने। अल्लाह तआला हमारे दोषों एंव त्रूटियों को क्षमा करे तथा हमारे भीतर भी ऐसी शक्ति पैदा कर दे जिसके द्वारा काम लेते हुए हम इस्लाम को दुनिया के सारे धर्मों पर ग़ालिब कर सकें और हममें से प्रत्येक इस्लाम का सच्चा सेवक बन जाए और दुनिया की अभिलाषाएँ हमारे लिए द्वित्तीय स्थान की हो जाएँ। हमारे दिल इस भावना से परिपूर्ण हों कि हमने दीन को बुलन्द करने के लिए अपनी सारी क्षमताओं को उपयोग में लाना है। अल्लाह तआला हमारे कर्म तथा सामर्थ्यों में ऐसी शक्ति तथा बल पैदा फ़रमा दे कि दुश्मन की शक्ति एंव ज़ोर हमारे समक्ष दुर्बल एंव निरर्थक हो जाए। अल्लाह तआला हमारे दोषों को न केवल क्षमा करे बल्कि हमारे दिलों में पापों से ऐसी घृणा पैदा कर दे कि हम कभी अल्लाह तआला के आदेशों को न तोड़ने वाले हों, उन लोगों में शामिल हों जिनके विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम लोग भी मेरे आदेशों का पालन करो, मुझपर ईमान को सम्पूर्ण बनाओ। नेकियों तथा अच्छे कर्मों से हमें मुहब्बत हो जाए, तक़वा हमारे दिलों में दृढ़ता के साथ स्थापित हो जाए और अल्लाह तआला की मुहब्बत तथा इश्क़ हमारा आहार बन जाए हमारा प्रत्येक कर्म तथा हमारा प्रत्येक कथन व काम अल्लाह तआला की इच्छानुसार हो जाए और जब हम उसके समक्ष उपस्थित हों तो अपनी प्रसन्नता का प्रमाण पत्र हमें देने वाला हो। अल्लाह तआला करे कि रमज़ान हमें वास्तव में ये सब कुछ प्राप्त करने वाला बना दे।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 19.06.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*